अभिभावक विद्यालय

चेतना विकास मूल्य शिक्षा

हिन्दी कविता

PP - I

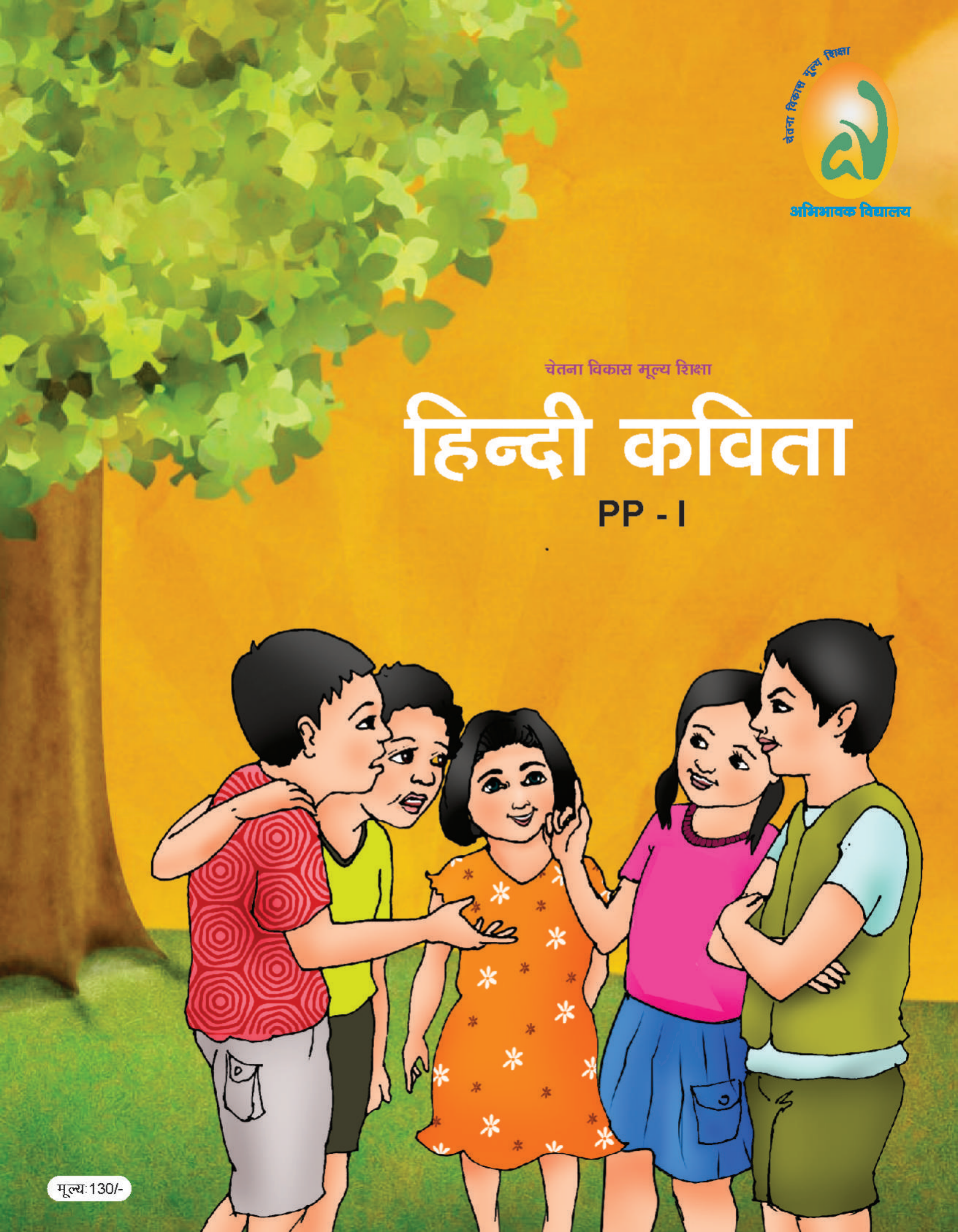

मूल्य: 130/-

चेतना विकास मूल्य शिक्षा संस्कार समिति द्वारा संचालित

अभिभावक विद्यालय

वी.आई.पी. रोड़, रायपुर, छ.ग.

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा मान्यता प्राप्त

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री. ए. नागराज जी
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद)
श्री नर्मदांचल, भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला - अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

मानवीय शिक्षा शोध केन्द्र
अभ्युदय संस्थान, अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

पूर्व प्राथमिक पाठ्यक्रम - लेखकगण एवं अध्यापिकागण

अनामिका वरू, निताशा त्यागी, चानी चावड़ा, ज्योति पुराणिक, सुचित्रा श्रीवास्तव, मीना गाड़ोदिया, अनीता शाह, नीति जैन, पूनम साहू, ज्योति अग्रवाल, सुवर्णा शास्त्री, शालू अग्रवाल, गौरी साहू, ममता जैन, डॉली, नीतू शर्मा, सोनालिका अग्रवाल, संध्या शर्मा, पिंकी पारेख, रेखा अग्रवाल, नीधि महाजन, रोज़ी, गुरलीन, सुषमा अग्रवाल, रजनी अग्रवाल, पुनीता चावड़ा, प्रियंका शर्मा, वंदना शर्मा, उषा अग्रवाल, रचिता अग्रवाल, शीला गोपाला, रीतिका अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, नवनीत जैन, श्रेया मिश्रा, दीप्ती चावड़ा

लोगो डिजाईन : सुषमा अग्रवाल
चित्रांकन : रंजीत भाटिया, राजेन्द्र ठाकुर
लेआउट डिजाईन : व्यू डिजाईन, रायपुर

अभिभावक विद्यालय

हिन्दी कविता

पी.पी. 1

नाम ....

पता ....

....

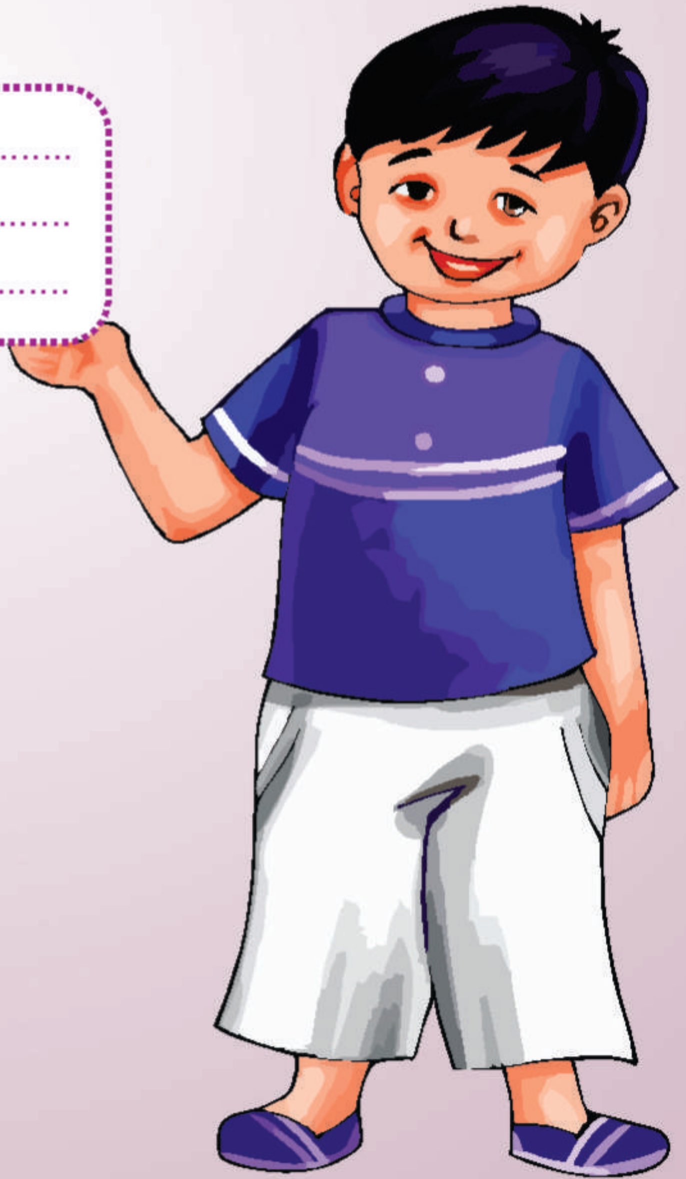

वंदना

वंदना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की।।
कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरंतरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी?
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी।।
श्रद्धा समर्पित जिनसे आए, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना।।
पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

—प्रदीप पूरक, बिजनौर (उ.प्र.)

प्राक्कथन

मानवीय शिक्षा का प्राक्कथन एक आवश्यकता के रूप में हमें महसूस हुआ क्योंकि यह पाठ्यपुस्तिका का उपक्रम नर्सरी कक्षा से प्रस्तुत किया गया है। क्रम से परंपरागत होने तक सिलसिला बना ही रहेगा। सहअस्तित्व अपने स्वरूप में व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक–एक वस्तु जैसे परमाणु, अणु, ग्रह, गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा, यह डूबी, भीगी, घिरी होने के आधार पर नियंत्रण, क्रियाशीलता और ऊर्जा सम्पन्नता प्रत्येक वस्तु में नित्य प्रमाण के रूप में देखा गया है। साथ में यह भी समझा गया है कि व्यापक वस्तु में समाहित सम्पूर्ण एक–एक वस्तुओं की अविभाज्यता नित्य वर्तमान है। यही सह–अस्तित्ववादी विश्व–दृष्टिकोण का मूल रूप है। ऐसे सहअस्तित्व नित्य प्रभावी रहना स्वाभाविक है।

सहअस्तित्व को ध्यान में रखते हुए प्रथम कक्षा से अर्थात् अक्षराभ्यास से चलकर शब्दों का अभ्यास और शब्दों के अभ्यास से अर्थ का अभ्यास, अर्थों के अभ्यास के तात्पर्य में हर शब्द किसी वस्तु का, क्रिया का अथवा फल–परिणाम का नाम है। ऐसा अर्थ इंगित होना ही शब्द से अर्थ समझा गया है, इसलिए अर्थबोध करने के उपक्रम में शिक्षा विधा को अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्रस्तुत हुआ। यह पठन विधि से अर्थ बोध तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसे प्रस्तावित करना इसलिए आवश्यक समझा गया कि मानव सह–अस्तित्व विधि से ही समुदाय चेतना से मानव चेतना में संतुलित होना है। मानव चेतना का प्रयोजन, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्वपूर्वक जीने का प्रमाण है। इससे अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की पहचान होना स्वाभाविक है।

यह तो सटीक है कि विगत विधि से जो पाठ–पठन का लक्ष्य था, उसे आगे पढ़ाने के जिन भी उपायों को खोजा गया है, वह सब सार्थक है, मूलतः मानवीय शिक्षा के अभाववश सामुदायिकता, मतभेद, साम, दाम, दण्ड, भेद, परस्पर समुदायों की निहित अतिशोधों का विश्वास प्रयोग हो चुका है। इन सब अभिशापों से मुक्ति पाने की आकांक्षा मानव में निहित होना भी पाया गया, इसलिए मानवीय शिक्षा का निश्चयीकरण आवश्यक समझा गया है। इसे क्रियान्वयन करने की क्रमविधि से प्रस्तुत किया।

मानवीय शिक्षा में मानव का अध्ययन प्रधान उद्देश्य है। इस उद्देश्य को सार्थक बनाने के क्रम में नर्सरी कक्षा से ही सूत्रपात रूप में मूल्य संबंधी और शरीर के अवयव संबंधी शब्दों का अधिकतम चयन किया गया है। साथ में परस्पर मानव संबंधों से संबंधित शब्दों का चयन किया गया है। इसे हर बालक अथवा किशोर आसानी से पहचान पायेगा। ऐसी हमारी स्वीकृति है। यह सार्थक और सफल होना पाया गया है। भविष्य में मूल्यांकन होता रहेगा। इस विधि से सर्वशुभ होने की कामना है।

ए. नागराज
प्रणेता एवं लेखक
मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
श्री नर्मदांचल, भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

लेखकीय

मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) के प्रणेता श्री ए. नागराज जी द्वारा हुए अनुसंधान में उन्हें सम्पूर्ण अस्तित्व, सहअस्तित्व सहज रूप में होना रहना अनुभव हुआ। जो "मध्यस्थ दर्शन" "सहअस्तित्व वाद" शास्त्र रूप में प्रस्तुत हुआ। इस अनुसंधान से शिक्षा और व्यवस्था विकल्प रूप में प्रस्तुत हुई है।

''मध्यस्थ दर्शन'' सह अस्तित्ववाद से निःसृत्त हुई "चेतना विकास मूल्य शिक्षा"

श्री ए. नागराज जी के मार्गदर्शन में चेतना विकास मूल्य शिक्षा, प्राथमिक विद्यालय का पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। उनके अनुसार पांचवीं तक व्यवहारिक शिक्षा हो। व्यवहारिक शिक्षा के चार स्तंभ हैं :– संबोधन, सहयोग, आज्ञापालन और नियंत्रण।

बालक जन्म से सत्यवक्ता, न्याय एवं सही चाहने वाला होता है। माता–पिता–अध्यापक सही है, इसी विश्वास से बच्चा अपनी यात्रा शुरू करता है।

प्रत्येक बालक शोध में लगा ही रहता है। जिज्ञासु है, विचारशील है, कल्पनाशील है, समझने की असीम क्षमताओं सहित है।

बालक जिस परिवेश में रहता है उसी भाषा में समझना उसके लिए सरल होता है। समझना ही शिक्षा–संस्कार है।

तीन वर्ष का बालक जब विद्यालय आता है उसके पास भाषा कम भाव अधिक होते हैं। यही उसका खजाना है । इस उम्र में बच्चे माँ के सबसे करीब होते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा इन्हीं संबंधों में निरंतरता लाती है, जैसे बच्चा माँ को जानता है तो ''अ–अम्मा'' कहने पर बच्चा अपने आप अम्मा की व्याख्या करने लगता है। अम्मा मुझे खाना खिलाती है, अम्मा मुझे सुलाती है, अम्मा मुझे प्यार करती है। घर जाकर अम्मा के गीत गाता है। माँ खुश होती है, अपनी ममता करती है। शिक्षक का आदर करने की शिक्षा देती हैं। शिक्षक पुनः "आ–आदर" "म–ममता" , "उ–उपकार" जैसे शब्दों का अर्थ बोध कराते हैं। यहाँ से शुरू होता है शिक्षा का मानवीयकरण जहाँ शिक्षक विद्यार्थी एवं अभिभावक मूल्यों से बंध जाते हैं।

भाषा सब कुछ नहीं पर बहुत कुछ है। भाषा जितनी सार्थक एवं सम्मानजनक होगी उतनी ही स्वस्थ मानसिकता का विकास होगा। यह जिम्मेदारी परिवार एवं विद्यालय दोनों की है।

मूल्य आधारित शिक्षा तभी सफल होगी जब माता–पिता एवं शिक्षक स्वयं समझदार, ईमानदार एवं जिम्मेदार होंगे।

पाँच वर्ष की आयु तक बालक–परिवार में माता–पिता के साथ तीन पीढ़ी के बीच रहकर अनुकरण–अनुसरणपूर्वक सीखें यहीं बालक के लिये सहज प्रक्रिया हैं परन्तु आज की व्यस्ततम जीवन शैली, अनन्तः इच्छाओं को पूरा करने की दौड़, अपने बालक को प्रतियोगिता की दूनिया में अव्वल देखने की कामना ने दो–दो वर्ष के बच्चों को भी घर से बाहर भेजने बाध्य किया है एवं शिक्षा को आज अग्रिम व्यवसाय के दर्जे पर ला खड़ा किया है।

अभिभावक विद्यालय एक शुभ शुरूआत है शिक्षा को व्यवसाय से मुक्त करने की, यहां अभिभावक ही अध्यापक है जो बिना प्रतिफल अपेक्षा अपने बच्चों के साथ–साथ आस–पास के अन्य बच्चों की शिक्षा एवं संस्कार एवं स्वास्थ्य की जिम्मेदारी स्वयंस्फूर्त वहन किये हैं।

चेतना विकास, मूल्य शिक्षा आधारिक पूर्व प्राथमिक पाठ्यक्रम की पुस्तिका प्रथम बार लिखी गई है अतः इसमें संशोधन एवं परिमार्जन की अपार संभावनाएं हैं। मानवीय शिक्षा शोध में लगे सभी से सतत् मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

लेखकगण

बेटा जी

बेटा जी बेटा जी कहकर
माता जी मुझे बुलाती।
बड़े प्यार से मुझे बिठाकर
माता जी आहार कराती।

बेटा जी बेटा जी कहकर
पिता जी मुझे बुलाते।
बड़े प्यार से मुझे बिठाकर
पिता जी मुझे समझाते।।

बेटा जी बेटा जी कहकर
अध्यापिका जी मुझे बुलाती।
बड़े प्यार से मुझे बिठाकर
अ आ इ ई मुझे पढ़ाती।।

माता जी की थपकी

माता जी की थपकी
मुझको अच्छी लगती
थपकी देकर मुझे सुलाती
थपकी देकर मुझे उठाती
माता जी की थपकी
मुझको अच्छी लगती

सार्थक संवाद

अध्यापिकाजी – अरे, वाह बेटाजी, आज तो आप बहुत अच्छे लग रहे हैं। आपके बालों में तेल लगाकर इतनी सुदंर कंघी किसने की है?

बालक – मम्मीजी ने।

अध्यापिकाजी – आपके नाखुन किसने काटे हैं?

बालक – पापा जी ने।

अध्यापिकाजी – आज आप कितने साफ–सुधरे लग रहे हैं, बेटाजी।

बालक – हॉ।

अध्यापिकाजी – आपके कपड़े कौन ले कर आया?

बालक – पापा जी, मम्मी जी।

अध्यापिकाजी – आपके मम्मी जी, पापा जी बहुत अच्छे हैं। बेटा जी, आप घर जाकर कहना कि आप बहुत अच्छे हो।

बालक – हॉ बोलूँगा।

अध्यापिकाजी – क्या बात है बेटा जी, आज आप उदास हैं, अच्छा नहीं लग रहा है?

बालक – आज मम्मी जी ने मुझे मारा है।

अध्यापिकाजी – बेटा जी मम्मी जी बच्चो को कभी नही मारते, मम्मीजी तो थपकी देते है

बालक – थपकी? थपकी क्या होती है?

अध्यापिकाजी – देखो जैसे मैंने धीरे से आपके गाल मे थपकी दी, इसको मारना बोलेंगे क्या?

बालक – नही, मुझे तो दर्द नहीं हुआ।

अध्यापिकाजी – हाँ बस इसे ही थपकी कहते है और यह थपकी मम्मी जी कई बार आपको देती हैं।

– आपको थपकी देकर सुलाती हैं।

– थपकी देकर उठाती हैं।

– आप खाना नहीं खाते तो थपकी देकर खाना खिलाती हैं।

– आप सुनते नहीं हो तो थपकी देकर आपको बात सुनने कहती हैं।

बालक – समझ गया, मम्मीजी ने मुझे मारा नहीं था, थपकी दी थी।

अच्छी बात

मम्मी जी बोले, पापा जी बोलें
भाई जी बोले, बहन जी बोले
क्योंकि...... ये ही अच्छी बात
अच्छी बात, अच्छी बात - 2

दादी जी बोले, दादा जी बोले
नानी जी बोले, नाना जी बोले
क्योंकि...........ये ही अच्छी बात
अच्छी बात, अच्छी बात - 2

चाची जी बोले, चाचा जी बोले
मामी जी बोले, मामा जी बोले
क्योंकि...........ये ही अच्छी बात
अच्छी बात, अच्छी बात - 2

अध्यापिका जी बोले,
अध्यापक जी बोले
क्योंकि...........ये ही अच्छी बात
अच्छी बात, अच्छी बात - 2

शरीर

शरीर का मैं ध्यान रखता
रोज सवेरे मैं उठ जाता
दाँतों को मैं साफ करता
पेट भी मैं साफ करता

नहाकर मैं स्वच्छ हो जाता
रोज सवेरे मैं उठ जाता

बालो में मैं कंघी करता
और बालों को छोटे रखता

नाखून को भी साफ करता
रोज सवेरे मैं उठ जाता
शरीर का मैं ध्यान रखता

छोटा सा शरीर मेरा

छोटा सा शरीर मेरा
बढ़ रहा है हर दिन

जूस पीकर, फल खाकर
बढ़ रहा है हर दिन

छोटा सा शरीर मेरा
बढ़ रहा है हर दिन

दूध पीकर, मेवा खाकर
बढ़ रहा है हर दिन

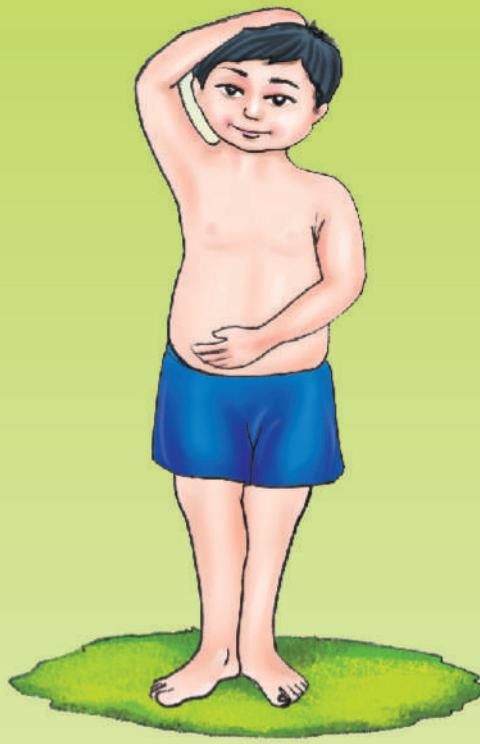

छोटा सा शरीर मेरा
बढ़ रहा है हर दिन

दाल पीकर, भात खाकर
बढ़ रहा है हर दिन

छोटा सा शरीर मेरा
बढ़ रहा है हर दिन

सूप पीकर, रोटी खाकर
बढ़ रहा है हर दिन

छोटा सा शरीर मेरा
बढ़ रहा है हर दिन

अक्षर गीत

अ से अम्मा, आ से आहार
हमको सब ही करते प्यार

इ से इच्छा, ई से ईक्षण
चाहते खुश रहना हर क्षण

उ से उत्सव, ऊ से ऊष्मा
है पसन्द हमें सत्य बोलना

ऋ से ऋतु, ऋ से ऋतु
शाला आते पढ़ने हेतु...

ए से एक, ऐ से ऐक्य
कितना सुन्दर है ये लोक्य

ओ से ओठ, औ से औषधि
दूर भगाये आधि व्याधि

अं से अंग, अः से अःस
खुश होकर अब हँस हँस हँस
हाँ हँस हँस हँस

धीरे धीरे बोलूँ

धीरे-धीरे बोलूँ मैं
अच्छी भाषा बोलूँ
माताजी से बोलूँ मैं
पिताजी से बोलूँ
धीरे-धीरे बोलना
सबको है भाता
धीरे-धीरे बोलना
व्यवहार सही होता

विद्यालय गीत

विद्यालय मे आने से
पूरी होती चाहना

अ आ इ ई लिखना सीखे
क का कि की पढ़ना

अगुँलियों से गणना सीखें
ABCD लिखना

गोल चकोर बनाना सीखें
याद करें हर महीना

खेलें कूदें नृत्य सीखें
गायें गीत सुहाना

विद्यालय में आने से
पूरी होती चाहना

सार्थक संवाद

अध्यापिकाजी – आप सब विद्यालय बहुत खुश हो कर आए हैं।

– बताइए आप सब इतने खुश खुश कैसे हैं?

बालक – 1. कल मैं जंगल सफारी गया था।

2. पापा जी मेरे लिए नई बोतल लाए।

3. आज मैं ABCD लिखकर लाया।

4. मेरे पास नया बैग है।

5. टिफिन में आलू पराठा है।

6. मैं पापा जी को पानी दिया, पापा जी Very good बोले

अध्यापिकाजी – Very Very good बच्चों इतनी अच्छी अच्छी बातें इतने अच्छे अच्छे काम करके खुश तो होना ही है। आपको पता है :–

अच्छी–अच्छी सोच और
अच्छी–अच्छी बात
अच्छी–अच्छी बात और अच्छे अच्छे काम
यही तो है बच्चे बूढ़े और बड़ों का काम

अध्यापिकाजी – चलो सब मिलकर गाते हैं

अच्छी–अच्छी सोच और
अच्छी–अच्छी बात
अच्छी–अच्छी बात और अच्छे–अच्छे काम
यही तो है बच्चे बूढ़े और बड़ों का काम

बालक – अध्यापिका जी पानी पी लूँ?

अध्यापिकाजी – पी लीजिए बेटा जी।

बालक – मुझे भी प्यास लगी है।

अध्यापिकाजी – आप भी पी लीजिए बेटा जी।

बालक – अध्यापिका जी बॉटल नहीं है

अध्यापिकाजी – कोई बात नहीं आप मेरी बोतल से पी लीजिए।

बालक — अध्यापिका जी मैं दे दूँ?

अध्यापिकाजी — Good जरूर बेटा जी यह तो अच्छी बात है चलिए अच्छी बात के लिए हम सब Clapping करेंगे, और बेटा जी आप पानी पीकर भाई जी से क्या कहेंगे? Thank You भाई जी, क्या कहेंगे?

बालक — Thank You भाई जी

अध्यापिकाजी — Very good, Most Welcome बेटा जी

— बच्चों चलिए अब हम अपने बैग से स्लेट, पेंसिल निकालेंगे आराम से बेटा जी धीरे–धीरे आराम से निकालेंगे जब काम हो जाएगा तब आराम से अच्छे से वापस रखेंगे ऐसा हम प्रतिदिन करेंगे।

अध्यापिकाजी — हम सब विद्यालय क्यों आते हैं? कौन बताएगा ?

बालक — पढ़ने

बालक — ABCD पढ़ने

बालक — अच्छे बच्चे बनने

बालक — 1 2 3 पढ़ने

अध्यापिकाजी — Very good, बच्चों विद्यालय हम समझने और सीखने आते हैं।

सही बात

सही बात को सुनते हम

सही बात को बोलें हम

सही बात को करते हम

कहलाते अच्छे बच्चे हम

कहलाते सच्चे बच्चे हम

भाई - बहन

साथ में आते भाई–बहन
मिलकर रहते भाई–बहन

मिलकर खेले भाई–बहन
नृत्य करें हम भाई–बहन

साथ में पढ़ते साथ में सीखते
खुश होते हम भाई–बहन

भोजन करते और खेलते
भाषा सीखें भाई–बहन

मिलकर रहते भाई–बहन
खुश रहते हैं भाई–बहन

सार्थक संवाद

अध्यापिकाजी – बेटा जी जैसे अ से अम्मा होता है आपने अम्मा यानि मम्मीजी को समझा।

– मम्मीजी क्या–क्या करती है ये समझा।

– आज हम समझेंगे आ से 'आदर'।

– आदर किसे कहते है कोई बतायेगा।

बालक – मम्मीजी कहती है बड़ो का पैर छूते हैं, बड़ों का आदर करते है।

बालक – अध्यापिका जी का आदर करना, उनको प्रणाम करना।

अध्यापिकाजी – बहुत अच्छा बेटाजी, आपकी मम्मी जी कितनी अच्छी बात बताती हैं, उनका भी आदर करना।

– उसी में जोड़ते हुये मैं भी बताऊ कि आदर किसे कहते हैं?

बालक – जी अध्यापिकाजी।

अध्यापिकाजी – बेटा जी अभी आप सब छोटे बच्चे हैं अभी तो बहुत कुछ सीखना है समझना है।

बालक – सीखने–समझने के लिए बड़ों का कहना सुनना होता है।

अध्यापिकाजी – पापाजी आपसे कुछ कहें जैसे – बेटाजी एक ग्लास पानी ला दो तब आप कहो अभी लाता हूं और अपना सब काम छोड़ कर पानी ला कर दिये ये पापाजी का आदर है।

अध्यापिका जी की बात सुनना अध्यापिकाजी का 'आदर' है।

बालक – अध्यापिकाजी मैं कहना मानती हूं।

बालक – मैं कभी कभी मानता हूं

अध्यापिकाजी – कोई बात नहीं बेटा जी जब आपको समझ आयेगी तब आप हमेशा करोगे।

कौन – कौन 'आदर' किसे कहते है समझ गया?

बालक – मैं .... मैं .... मैं

अध्यापिकाजी – कैसे करेंगे?

बालक – कहना मानेंगे

अध्यापिकाजी – बहुज अच्छा बच्चों आप सबसे बात करके मुझे बहुत खुशी मिलती है। जानते हो क्यों ....

बालक – क्यों ....

अध्यापिकाजी – क्योंकि आप मेरी बात सुनते हो और मानते भी हो, इसका मतलब मेरा आदर करते हो आदर से मैं खुश होती हूं।

मम्मीजी पापाजी का आदर करना, वो भी खुश हो जायेंगे।

तो बोलो आ से ''आदर'' करेंगे

अध्यापिकाजी – आप सब सुनते हो?

बालक – जी अध्यापिका जी

बालक — सब बात सुनते है।

अध्यापिकाजी — सब बात सुनते है पर बात मानते कितनी हैं?

बालक — ....?

अध्यापिकाजी — सुनना और सुनकर मानना दोनो अलग – अलग है।

जैसे :– मम्मा जी ने कहा

1) बेटा जी उठो आपने सुना ....

2) फिर कहा बेटा जी उठो, फिर सुना ....

3) बार – बार कहा उठो बेटा जी बस आ जायेगी आप तैयार नहीं हो पाओगे।

आपने फिर सुना ....

– सुना तो बहुत बार .... माना कितनी बार में

बालक — हम्म

अध्यापिकाजी — 1) मम्मा जी ने कहा बेटा जी अब खेलना बहुत हो गया खिलौने उठा कर रख दो।

2) मम्मा जी ने कहा बेटाजी अब टी.व्ही. बन्द कर दो।

आप सब सुनते है पर सुनकर मानने वाला काम कितने बार में करते हो ये ध्यान देना ठीक है रोज पूछूंगी आप सबसे ....

बालक — हम नहीं सुनते हैं तब मम्मीजी डाँटते हैं।

अध्यापिकाजी — तो बच्चों यदि आप मम्मीजी का कहना सुनोगे भी और मानोगे भी तो यदि आप मम्मी जी का कहना सुनोगे भी और मानोगें भी तो यही 'आदर करना' है। बड़ो का कहना मानना ही उनका 'आदर' है।

अध्यापिकाजी — आप सबने मेरी बात ध्यान से सुनी इसके लिए Thank you बेटा जी

पानी

पानी आया छम छम छम
मम्मी के संग खेलें हम

पानी में है भीगें हम
भाई जी के संग कूदें हम
बहन जी के संग नाचें हम
पानी आया छम छम छम

गीला शरीर है मेरा होता
कपड़ों को मैं बदल हूँ लेता
काढ़ा पीकर स्वस्थ हो जाता
पानी देख मैं खुश हो जाता

पानी आया छम छम छम
मम्मी के संग खेलें हम

उत्सव

हर क्षण उत्सव, हर पल उत्सव
नित्य है उत्सव, नित्य है उत्सव
मम्मी जी जब खेल खिलाती
पापा जी जब है समझाते
समझ कर हम खुश हो जाते
हर क्षण उत्सव, हर पल उत्सव
बहन जी के संग मैं खेलूँ
भाई जी के संग मैं खेलूँ
खेलकर हम खुश हो जाते
हर क्षण उत्सव, हर पल उत्सव
नित्य है उत्सव, नित्य है उत्सव

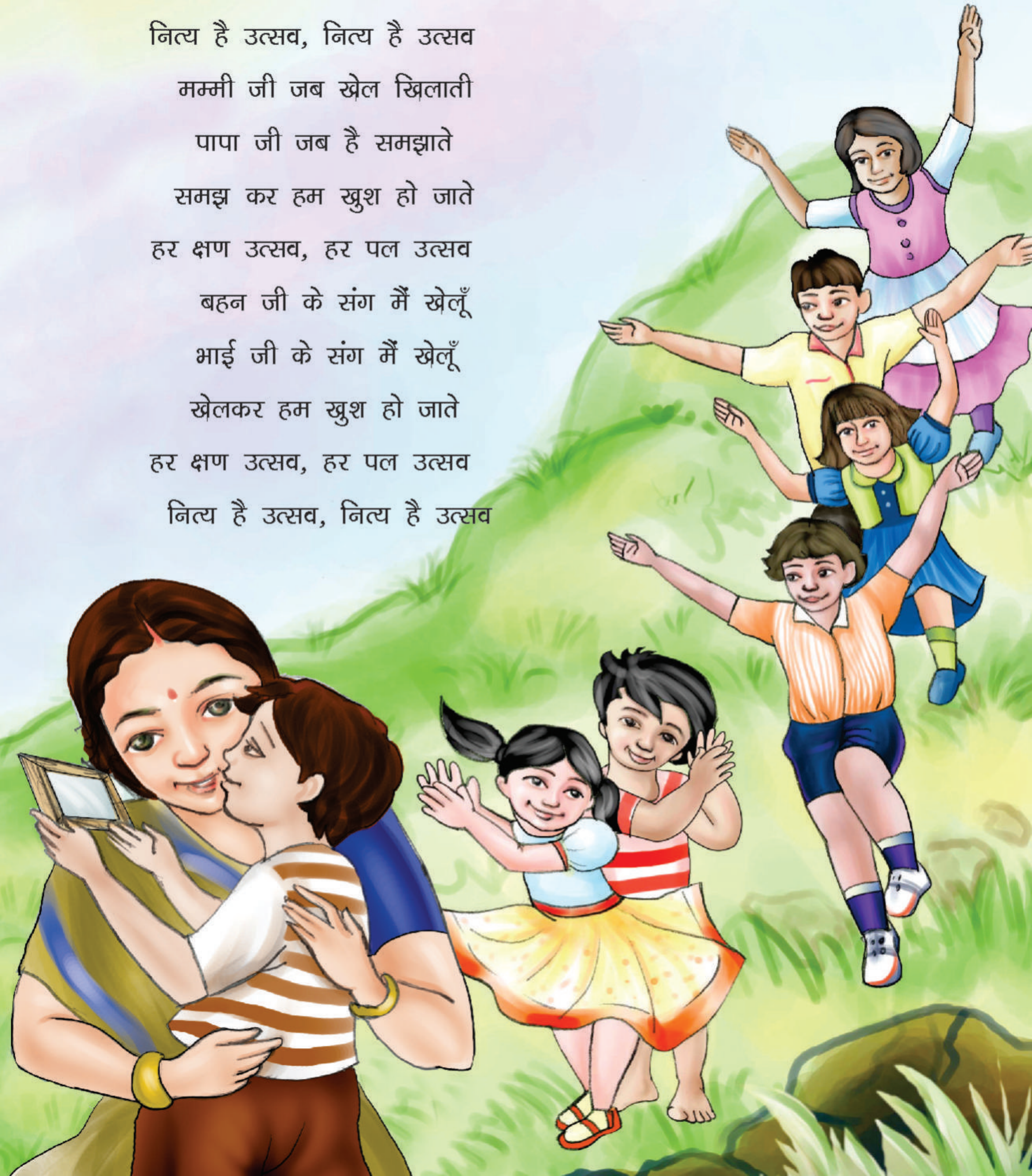

सार्थक संवाद

अधयापिका जी – नमस्ते बच्चों, कैसे हो? सब खुश होकर विद्यालय आये हो?

बालक – जी अध्यापिका जी

अध्यापिका जी – आज आप सब क्या नाश्ता किये, मम्मी जी क्या – क्या बनाये थे?

बालक – मैं पराठा खाकर आई।

मैं सैंडविच लाई हूँ।

मैं Cookies लाई हूँ।

मुझे मम्मा जी ने आलू पराठा दिया है।

अध्यापिकाजी मै रोटी–सब्जी लाया हूँ।

मैं लड्डू और काजू कतली लाया हूँ।

अध्यापिका जी कल छुट्टी है, तो मम्मा जी समोसा बनायेंगी, मुझे समोसा बहुत पसन्द है।

अध्यापिका जी – अरे वाह बेटा जी, आप सब की मम्मी जी कितना अच्छा नाश्ते की तैयारी करती हैं। अच्छा बताओ तो पराठा कैसा दिखता है?

बालक – गोल–गोल

अध्यापिका – आपकी मम्मी जी पराठा गोल बनाती हैं, मैं त्रिकोण बनाती हूँ, चौकोर भी बना सकती हैं। जैसे –

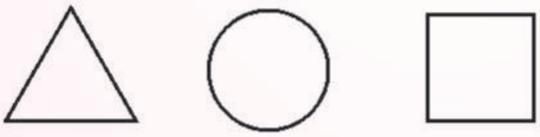

पराठा हम चाहे जैसे आकार में बना सकते हैं।

बालक – मेरी मम्मीजी गोल बनाती हैं।

अध्यापिका – ठीक है, कल मैं घर से बना कर लाऊंगी और आप सबको दिखाऊंगी, मैं त्रिकोण बनाती हूँ। ठीक है।

अध्यापिका – और त्रिकोण आकार (Triangle Shape) की क्या–क्या चीजें होती हैं बताओ?

बालक – अध्यापिका जी मेरे को (Triangle Shape) बहुत पसन्द है क्योंकि समोसा Triangle Shape का होता है।

अध्यापिका – Good... समोसा

बालक – सैण्डविच।

अध्यापिका – Ok आप कह रहे हैं कि मम्मा जी जो सैंडविच बनाती हैं उसे जब बीच से काटते हैं तब वो Triangle दिखती है। Good...

अध्यापिका – वैसे Bread कौन से Shape की होती है।

बालक – Square वर्ग/चौकोर

अध्यापिका – Good Square होती है, उसे चौकोर भी कहते हैं। और Square चीजे कौन – कौन सी है।

बालक – Stool

बालक – Switch Board

बालक – Tiles

अध्यापिका – Good

अध्यापिका – ये कौन सा Shape है।

बालक – Rectangle आयत

अध्यापिका – अरे वाह बेटाजी आपको तो सब पता है। आपको किसने बताया?

बालक – मम्मा जी।

अध्यापिका – Rectangle चीजे कौन–कौन सी दिख रही हैं बताओ घर में या कक्षा में?

बालक – Slate ।

बालक – Mobile अध्यापिका जी।

बालक – ये Book भी Rectangle है।

बालक – कॉपी भी।

बालक – अपना बोर्ड भी Rectangle है।

बालक – पेंसिल बॉक्स।

बालक – पापा जी का सूटकेस।

बालक – मम्माजी का पर्स भी।

बालक – TV ।

अध्यापिकाजी – Very very good, clapping करते हैं, आप सबके लिए बहुत बढ़िया बच्चों, आप सब चीजों को ध्यान से देखते है। ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

अध्यापिकाजी – 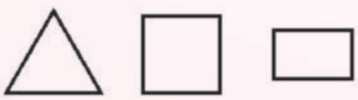

ये तीनों Shape आप लोगों ने बताए, और कौन–सा Shape आप देखते हैं?

बालक – Circle (वृत्त) 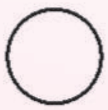

बालक – Round (गोल)

बालक – गोल गोल रोटी।

बालक – गाड़ी का चक्का गोल।

बालक – सूरज गोल।

बालक – Pizza गोल।

बालक – Cookies गोल।

बालक – मम्मीजी की बिन्दी गोल।

बालक – पैसा गोल।

बालक – आँख के अंदर काला गोल।

अध्यापिकाजी – खुश कर दिए बच्चों, कितना कुछ पता है आप लोगों को।

अध्यापिकाजी – बहुत बढ़िया, आज आपने जाना Shape के बारे में

बालक – अध्यापिकाजी Oval अंडाकार भी होता है।

बालक – Semi Circle अर्धवृत भी होता है।

अध्यापिकाजी – बेटाजी अभी आप ये चार आकार (Shape) को अच्छे से पहचानते हैं फिर बाकी आकारों (Shape) पर आप ध्यान देते रहना, हम लोग आगे बात करेंगे, ठीक है।

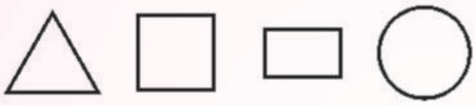

बालक – जी, अध्यापिकाजी।